प्रेषक,

रमेश चन्द्र राय,
मुख्य वित्त एवं लेखाधिकारी,
पंचायती राज, निदेशालय
उत्तर प्रदेश।

सेवा में,

श्री राम सहोदर सिंह,
निदेशक–पंचायती राज लेखा/
कोषाध्यक्ष, पीएमयू0 बीआरजीएफ0।
लखनऊ।

संख्या–1/पी0एस0/2011–1/29/2011 लखनऊ दिनांकः 03 दिसम्बर, 2011.

विषय–उत्तर प्रदेश राज्य में पंचायती राज संस्थाओं के अन्तर्गत निर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों एवं कर्मियों के प्रियासॉफ्ट पर विकसित किए गये मैनुअल के रूप में स्वीकार करने अथवा नहीं, पर मन्तव्य से अवगत कराने के सम्बन्ध में।

महोदय,

कृपया उपरोक्त अपने पत्रांक आर0–9047/33–पी0एम0यू0/2011 दिनांक 22, नवम्बर 2011 का सन्दर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें, जो प्रियासाफ्ट पर विकसित किए गये मैनुअल के रूप में स्वीकार करने अथवा नहीं, पर मन्तव्य से अवगत कराने विषयक हैं। इस सम्बन्ध में अवगत कराना है कि मेरे द्वारा पत्रांक–1/पी0एस0/2011–1/21/2011, लखनऊ दि0 24 अगस्त 2011 के माध्यम से मन्तव्य स्पष्ट किया जा चुका है। फिर भी अपेक्षानुसार आप द्वारा संसूचित cdlgup@gmail.com Email-ID, पर स्पष्ट मन्तव्य व्यक्त कर दिया गया है। पुनः अवगत कराना है कि 'मेरे विचार' से प्रियासाफ्ट प्रशिक्षण तथा लेखांकन हेतु प्रस्तुत ड्राफ्ट पुस्तक की उपयोगिता सन्देहास्पद है। उक्त के आलेख को स्वीकार करने अथवा न करने पर निर्णय सक्षम स्तर से ही प्राप्त करने का कष्ट करें।

संलग्नकः उपरोक्तानुसार।

भवदीय,

(रमेश चन्द्र राय)
मुख्य वित्त एवं लेखाधिकारी
पंचायती राज, उत्तर प्रदेश।

प्रतिलिपि–1/पी0एस0/2011–1/29/2011 तद्दिनांक

निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतुः–

1. प्रमुख सचिव वित्त, उ0प्र0शासन।
2. प्रमुख सचिव पंचायती राज, उ0प्र0शासन।
3. निदेशक पंचायती राज, निदेशालय, उ0प्र0।
4. परियोजना निदेशक, बी0आर0जी0एफ0, उ0प्र0।
5. श्री सुमित त्रिपाठी तकनीकी निदेशक, एन0आई0सी, उ0प्र0।

(रमेश चन्द्र राय)
मुख्य वित्त एवं लेखाधिकारी
पंचायती राज, उत्तर प्रदेश।

contents of e-mail as send on 'cdlgup@gmail.com'

Dear Sir,

pl refer to my earlier letters, as sent to BRGF, regarding comments on the said course material. I still stand by my remarks and suggestions made on the issue. no any controversial argument is there. things are crystal clear. as far as my acquaintance with priasoft is concerned, I am monitoring the priasoft administratively & as an accounts knowing officer, not as software expert. as I have already explained I do not have any authorisation to make final comment as desired by Director panchayati raj lekha vide his office letters dt 22 & 29 Nov 2011. based on my experience vide conversations with ADOs(panchayat) & GPAs across the state regarding accounting on priasoft, I can say the effort appears to be futile and certainly it will not serve the purpose to achieve the goal of doing accounting on priasoft as desired.I fully agree with the version of Mr Sumit Tripathy that it is still on modification phase and being updated as per need of end users time to time. To prepare a ma
nual one must do the real accounting at all the 3 levels on PRIASoft and will have to incorporate the experiences of the end users to make it meaningful. Without going/siting with the end users, it is very difficult to prepare a manual of a S/W like PRIASoft. S/W is also specifying the 4-tier accounting classification consisting of Major,Minor,Sub and object heads which is most vital part of the system.

regards
ramesh chandra roy
CF&AO,
panchayatiraj nideshalay, UP.